रात्रिक्लास 25-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

जिसकी बुधि में जो ज्ञान रहता है वह फिर उसी अनुभव से सुनाते हैं। बाबाने कहा था दो, तीन रोज बाबा आकर सुनेंगे। तो बाबादेखे कैसे मुरलीचलाते हैं। लज्जा नहीं करनी चाहिए। लज्जा होती है तो समझा जाता है देह-अभिमानी है। बैठ कर सुनाते हैं तो कहेंगे देहीअभिमानी है। बेहद के टिका हुआ है। बेहद की नालेज है जो बच्चों को सुनाते हैं। मूल बात तो है पावनबनने की। बहुत हैं जो रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ सुनाने अच्छा भाषण करते हैं। परन्तु वह याद की यात्रा बड़ी सूक्ष्म है। नालेज सुनाना स्थूल है। टीचर भी बनना है। किसको कहना अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो यह भी ज्ञान है। ज्ञान से सदगति होती है। शास्त्र सुनने से सदगति नहीं होती है। इसलिए उनको रूहानी वा स्पीरचुअल ज्ञान नहीं कहा जाता है। वह तो तुम बच्चे ही जानते हो। रूहानी बाप कल्प2 के संगम युग पर आते हैं। तुम्हारी आत्मा को ज्ञान मिला है। बाप को भी ज्ञान है। वह फिर प्रवेश कर आकर सुनाते हैं। बाप में ज्ञान है औरों को सिखलाते हैं। तो कहेंगे पहले तो बाप को विश्व का मालिक होना चाहिए। परन्तु यह वन्डर है मैं सिर्फ तुम बच्चों को ज्ञान सुनाता हूं। मैं नहीं बनता हूं। मै भी तमोप्रधान बनूं तो तो तुमको सतोप्रधान कौन बनावेंगे। बाप कहते हैं मैं ही समझाता हूं। और कोई जानते ही नहीं हैं। बाकी यह गीता शास्त्र आद सभी हैं भक्ति-मार्ग के। से उन्नति नहीं होती है। नीचे ही गिरते जाते हैं। वास्तव मे सभी का धर्मशास्त्र एक ही है। बाकी कहा जाता है व्यभिचारी ज्ञान। उनका फिर ज्ञान नहीं कहेंगे। भक्ति कहेंगे। ज्ञान है ही एक। तुम ही स्टुडन्ट बनते हो और तो सभी हैं भक्त। ब्राह्मण बने तब समझे हम बाबा के एडाप्टेड चिल्ड्रेन हैं। परमात्मा बाप ऐसे नहीं कहेंगे यह एडाप्टेड बच्चे हैं। नहीं। वह फिर कहेंगे यह सभी स्वटर्स हैं। तुम जानते हो बाप द्वारा हम सुनते हैं। बाकी प्रेरणा आद की बात नहीं। तुम्हारी बुधि में जो ज्ञान है वह शुद्रों की बुधि मे हो न सके। वर्ण भी गाये हुये हैं। तुम समझते हो क्योंकि बाप ने समझाया है। वह सिर्फ कहते हैं वैश्य क्षत्री वैश्य शुद्र। तुम अपन को ब्रह्माकुमारी कहलाती हो। तुम बैठ कर अनुभव सुनाते हो। बाप पढ़ाते हैं। बाप अनुभव नहीं सुनावेंगे। यह सुना सकते हैं। परन्तु तुम समझते हो बाबा हमको पढ़ाते हैं। तो बाहर वाले भी समझे भगवान एक ही है। वही ज्ञान का सागर है। बच्चे जब समझाते हैं तो बुधि चली जाती है चित्रों पर समझाने को। बाप को याद रहे। याद से विकर्म विनाश होंगा। वह बुधि से निकल जाता है। भक्ति मार्ग की कमाई है झूठी। सुख कुछ नहीं। यह कमाई तो बहुत सुख देने वाली है। सुख से हटाना सन्यासियों का काम है। इसलिए कब वह राजयोग सिखला नहीं सकते। बेहद के बाप का यह है बेहद का वर्सा। बहुत सहज है। याद करना और आदि मध्य अन्त को जानना। यह है संगम युग का ईश्वरीय स्कूल। तुम पढ़ते ऐसे हो जैसे अल्फ बे वाले पढ़ते हैं। तुम स्टुडन्ट पढ़ते हो तो बच्चों को अल्फ और बेभी याद आते हैं। बाबा और बादशा ही। और कोई तकलीफ नहीं। उठते-बैठते चलते बाप की याद से बादशाही है ही। इसलिए अलफ कोयाद करना पड़े। पवित्र बनेंगे तो राज्य करेंगे। ऐसे2 समझाते रहना है। बाप की महिमा भी करनी है। बाप कहते हैं हियर नो ईविल। वह है शास्त्रों की बातों के लिए। उनसे नुकसान हुआ है। बाप ही समझाते हैं। ढेर के ढेर चित्र आद बनाये हैं। बाप सभी समझाते रहते हैं। कुछ न कुछ नई पाईन्टस आते रहेंगे। बाकी मूल बात एक ही है। फिर नये 2 आते रहते हैं तो तुम भी पढ़ते रहते हो। बाप भी पढ़ते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो आज कल कितने पदमपति हैं परन्तु यह सभी खलास हो जानी है। कोई का वार्स थोड़े ही रहेगा। करोड़ पदम सभी की मिट्टी में मिल जावेंगे। बम्स आद देखो कैसे बनाते हैं। यह रखने लिए थोड़े ही है। यह भी तुम जानते हो विनाश हुआ था और एक धर्म की स्थापना हुई थी। बाप कहते हैं मैं आया ही हूं सारी पुरानी दुनिया को खलास करने। यह भी ड्रामा में नूंध है। तुम स्वर्गवासी बनेंगे बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप दादा की याद प्यार गुडनाईट। ब्र रूहानी बच्चों को रूहानी बा प का नमस्ते।